चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	3-5-23	4	2-5

स्थायी नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बना युवाओं को तकनीकों से जोड़ना जरूरी : काम्बोज

एचएयू में आयोजित 10 दिवसीय प्रशिक्षण में शिक्षकों को दी जाएगी जानकारी

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में उच्च शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संपदा अधिकारों, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण की उपयोगिता, विकास व अन्य विषयों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इसमें मुख्यातिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज उपस्थित हुए। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकेडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के आइपीआर प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त रूप से 2 से 11 मई तक आयोजित किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक व कोर्स डायरेक्टर डा. मंजू मेहता ने स्वागत किया।

मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि इस प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य हकृवि सहित अलग-अलग शिक्षण संस्थानों से जुड़े शिक्षकों व शोधकर्ताओं को आइपीआर एवं प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण विषय पर गहनता से जानकारी देना है। स्थाई नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर युवाओं को नई तकनीकों से जोड़ना जरूरी हो गया है। उन्होंने बताया कि किसी भी संस्थान द्वारा प्राप्त किए गए आइपीआर की संख्या उसकी शोध गुणवत्ता का सूचक होती है। यह संस्थानों की वैश्विक रैंकिंग के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि 2005 में हकृवि ने डीएचआरएम में आइपीआर सेल की स्थापना की और 2007 में अपनी खुद की आइपीआर नीति विकसित करने वाला पहला कृषि विश्वविद्यालय भी बना। उन्होंने बताया कि हकृवि को 20 पेटेंट, 11 कापीराइट, सात डिजाइन और एक ट्रेडमार्क सहित 39 आइपीआर प्रदान किए गए हैं। विश्वविद्यालय ने अपनी प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण के लिए विभिन्न फर्मों के साथ 579 गैर- अनन्य लाइसेंस समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। उन्होंने बताया कि 21वीं सदी में सबसे चर्चित विषय इनोवेशन अर्थात नवाचार है, जिसमें नई तकनीकों, बेहतर उत्पादों, प्रक्रियाओं व सेवाओं में परिवर्तित करने का समावेश है। उन्होंने बताया कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2010 से 2020 के दशक को नवाचार के दशक के रूप में घोषित किया है। आइपीआर सैल इंचार्ज एवं सहायक निदेशक डा. विनोद ने बताया कि 10 दिवसीय प्रशिक्षण में एचएयू, संबंधित कालेजों, शोध केंद्रों व हांसी के राजकीय महिला महाविद्यालय से आए कुल 15 शिक्षक भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण में शिक्षकों को कृषि से संबंधित क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण में वैश्विक परिप्रेक्ष्य से राष्ट्रीय व उच्च शिक्षा संस्थानों की आइपीआर नीतियों पर भी सत्र आयोजित किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मंच का संचालन डा. जयंती टोकस ने किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को संबोधित करते एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। • पीआरओ

अंत में डा. अमोघवर्शा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर रजिस्ट्रार डा. बलवान सिंह मंडल, ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. केडी शर्मा, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. बलदेव डोगरा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. नीरज कुमार, वित्त नियंत्रक नवीन जैन आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	3-5-23	9	4-5

युवाओं को नयी तकनीक से जोड़ना जरूरी : प्रो काम्बोज

हिसार के हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मंगलवार को प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को संबोधित करते कुलपति प्रो बीआर काम्बोज। -निस

हिसार, 2 मई (निस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में उच्च शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संपदा अधिकारों, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण की उपयोगिता, विकास व अन्य विषयों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति प्रो बीआर काम्बोज ने किया। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकेडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के आईपीआर प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त रूप से 2 से 11 मई तक आयोजित किया जाएगा।

प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि इसका प्रमुख उद्देश्य हकृवि सहित अलग-अलग शिक्षण संस्थानों से जुड़े शिक्षकों व शोधकर्ताओं को आईपीआर एवं प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण विषय पर गहनता से जानकारी देना है। उन्होंने बताया कि किसी आईपीआर की संख्या उसकी शोध गुणवत्ता का सूचक होती है। यह संस्थानों की वैश्विक रैंकिंग के लिए भी महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि 21वीं सदी में सबसे चर्चित विषय इनोवेशन अर्थात नवाचार है, जिसमें नई तकनीकों, बेहतर उत्पादों, प्रक्रियाओं व सेवाओं में परिवर्तित करने का समावेश है। उन्होंने कहा कि यदि भारत को वैश्विक नवाचार का केंद्र बनाना है तो हमारे युवाओंए विशेष रूप से उच्च शिक्षण संस्थानों में स्थायी नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की आवश्यकता है। इसलिए सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के अनुसंधान को नवाचारों में बदलने के लिए एक व्यापक और कार्यात्मक तंत्र होना चाहिए।

आईपीआर सैल प्रभारी डॉ विनोद ने बताया कि 10 दिवसीय प्रशिक्षण में हकृवि, संबंधित कॉलेजों, शोध केंद्रों व हांसी के राजकीय महिला महाविद्यालय से

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	3.5.23	10	3-7

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

आईपीआर की संख्या शोध गुणवत्ता का सूचक

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में उच्च शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संपदा अधिकारों, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण की उपयोगिता, विकास व अन्य विषयों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मंगलवार को शुरू हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज इसमें मुख्य अतिथि थे। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकेडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के आईपीआर प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त रूप से 11 मई तक चलेगा। प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा कि इस प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य हकृवि सहित अलग-अलग शिक्षण संस्थानों से जुड़े शिक्षकों व शोधकर्ताओं को आईपीआर एवं प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण की जानकारी देना है। किसी भी संस्थान द्वारा प्राप्त किए गए आईपीआर की संख्या उसकी शोध गुणवत्ता का सूचक होती है।

हिसार। प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को संबोधित करते एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज। फोटो: हरिभूमि

संस्था की वैश्विक रैंकिंग में भी महत्वपूर्ण

यह संस्थानों की वैश्विक रैंकिंग के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि 2005 में हकृवि ने डीएचआरएम में आईपीआर सेल की स्थापना की और 2007 में अपनी खुद की आईपीआर नीति विकसित करने वाला पहला कृषि विश्वविद्यालय भी बना। हकृवि को 20 पेटेंट, 11 कॉपीराइट, 7 डिजाइन और एक ट्रेडमार्क सहित 39 आईपीआर प्रदान किए गए हैं। विश्वविद्यालय ने अपनी प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण के लिए विभिन्न फर्मों के साथ 579 गैर-अनन्य लाइसेंस समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। उन्होंने बताया कि 21वीं सदी में सबसे चर्चित विषय इनोवेशन अर्थात नवाचार है, जिसमें नई तकनीकों, बेहतर उत्पादों, प्रक्रियाओं व सेवाओं में परिवर्तित करने का समावेश है। प्रधानमंत्री ने 2010 से 2020 के दशक को नवाचार के दशक के रूप में घोषित किया है। यदि भारत को वैश्विक नवाचार का केंद्र बनाना है तो हमारे युवाओं, विशेष रूप से उच्च शिक्षण संस्थानों में स्थाई नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की आवश्यकता है। आईपीआर इंचार्ज एवं सहायक निदेशक डॉ. विनोद ने बताया कि 10 दिवसीय प्रशिक्षण में एचएयू, संबंधित कॉलेजों, शोध केंद्रों व हांसी के राजकीय महिला महाविद्यालय से आए कुल 15 शिक्षक भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मंच का संचालन डॉ जयंती टोकस ने किया। इस अवसर पर रजिस्ट्रार डॉ. बलवान सिंह मंडल, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	3-5-23	4	4-6

शिक्षण संस्थानों में स्थाई नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर युवाओं को नई तकनीकों से जोड़ना जरूरी : प्रो. काम्बोज

हिसार, 2 मई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में उच्च शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संपदा अधिकारों, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण की उपयोगिता, विकास व अन्य विषयों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इसमें मुख्यातिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित हुए।

यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकैडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के आईपीआर प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त रूप से 2 से 11 मई तक आयोजित किया जाएगा।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य हकृवि सहित अलग-अलग शिक्षण संस्थानों से जुड़े शिक्षकों व शोधकर्त्ताओं को आई.पी.आर.एवं प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण विषय पर गहनता से जानकारी देना है। उन्होंने कहा कि शिक्षण संस्थानों में स्थाई नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर युवाओं को नई तकनीकों से जोड़ना जरूरी है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

आई.पी.आर.सैल इंचार्ज एवं सहायक निदेशक डॉ. विनोद ने बताया कि 10 दिवसीय प्रशिक्षण में एच.ए.यू., संबंधित कॉलेजों, शोध केंद्रों व हांसी के राजकीय महिला महाविद्यालय से आए 15 शिक्षक भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण में शिक्षकों को कृषि से संबंधित क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण विषय पर जानकारी दी जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	3-5-23	4	5-6

युवाओं को नई तकनीक से जोड़ना जरूरी : प्रो. कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

एचएयू में 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में उच्च शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संपदा अधिकारों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। यह प्रशिक्षण आईपीआर प्रकोष्ठ की ओर से संयुक्त रूप से 11 मई तक आयोजित किया जाएगा। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक व कोर्स डायरेक्टर डॉ. मंजू मेहता ने मुख्य अतिथि एचएयू कुलपति प्रो. बीआर कांबोज का स्वागत किया।

मुख्य अतिथि प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि किसी भी संस्थान द्वारा प्राप्त किए गए आईपीआर की संख्या उसकी शोध गुणवत्ता का सूचक होती है। यह संस्थानों की वैश्विक रैंकिंग के लिए भी महत्वपूर्ण है। आज युवाओं को नई तकनीक से जोड़ना जरूरी है। वर्ष 2005 में एचएयू ने डीएचआरएम में आईपीआर सेल की स्थापना की और 2007 में अपनी खुद की आईपीआर नीति विकसित करने वाला पहला कृषि विश्वविद्यालय भी बना। उन्होंने बताया कि एचएयू को 20 पेटेंट, 11 कॉपीराइट, 7 डिजाइन और एक ट्रेडमार्क सहित 39 आईपीआर प्रदान किए गए हैं। विश्वविद्यालय ने अपनी प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण के लिए विभिन्न फर्मों के साथ 579 गैर-अनन्य लाइसेंस समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

आईपीआर सेल इंचार्ज एवं सहायक निदेशक डॉ. विनोद ने बताया कि 10 दिवसीय प्रशिक्षण में एचएयू, संबंधित कॉलेजों, शोध केंद्रों व हांसी के राजकीय महिला महाविद्यालय से आए कुल 15 शिक्षक भाग ले रहे हैं। मंच का संचालन डॉ. जयंती टोकस तो धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. अमोघवर्शा ने पारित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	3-5-23	5	5

शिक्षण संस्थानों में स्थाई नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर युवाओं को नई तकनीकों से जोड़ना जरूरी : प्रो. काम्बोज

हिसार, 2 मई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में उच्च शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संपदा अधिकारों, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण की उपयोगिता, विकास व अन्य विषयों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें मुख्यातिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित हुए। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकेडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के आईपीआर प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त रूप से 2 से 11 मई तक आयोजित किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक व कोर्स डायरेक्टर डॉ. मंजू मेहता ने सभी का स्वागत किया। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इस प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य हकृवि सहित अलग-अलग शिक्षण संस्थानों से जुड़े शिक्षकों व शोधकर्ताओं को आईपीआर एवं प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण विषय पर गहनता से जानकारी देना है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	02.05.2023		

शिक्षण संस्थानों में स्थाई नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर युवाओं को नई तकनीकों से जोड़ना जरूरी : प्रो. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 2 मई। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सहयोग में उच्च शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संपदा अधिकारों, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण की उपयोगिता, विकास व अन्य विषयों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें मुख्यातिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित हुए। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकेडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के आईपीआर प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त रूप से 2 से 11 मई तक आयोजित किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक व कोर्स डायरेक्टर डॉ. मंजू मेहता ने सभी का स्वागत किया। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इस प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य हकृवि सहित अलग-अलग शिक्षण संस्थानों से जुड़े शिक्षकों व शोधकर्ताओं को आईपीआर एवं प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण विषय पर गहनता से जानकारी देना है। उन्होंने बताया कि किसी भी संस्थान द्वारा प्राप्त किए गए आईपीआर की संख्या उसकी शोध गुणवत्ता का सूचक होती है। यह संस्थानों की वैश्विक रैंकिंग के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि 2005 में हकृवि ने डीएचआरएम में आईपीआर सेल की स्थापना की और 2007 में अपनी खुद की आईपीआर नीति विकसित करने वाला पहला कृषि विश्वविद्यालय भी बना। उन्होंने बताया कि हकृवि को 20 पेटेंट, 11 कॉपीराइट, 7 डिजाइन और एक ट्रेडमार्क सहित 39 आईपीआर प्रदान किए गए हैं। उन्होंने बताया कि यदि भारत को वैश्विक नवाचार का केंद्र बनाना है तो हमारे युवाओं, विशेष रूप से उच्च शिक्षण संस्थानों में स्थाई नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की आवश्यकता है। इसलिए सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के अनुसंधान को नवाचारों में बदलने के लिए एक व्यापक और कार्यात्मक तंत्र होना चाहिए। यह पारिस्थितिकी तंत्र हमारे युवा छात्रों को नए विचारों और प्रक्रियाओं से अवगत कराकर उन्हें प्रोत्साहित, प्रेरित व पोषित करेगा। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे इस प्रशिक्षण के माध्यम से पेटेंट, कॉपीराइट, डिजाइन व आईपीआर को बारीकी से समझें ताकि वे अपने शिक्षण संस्थानों में जाकर सीखी गई चीजों को लागू कर सकें, जिससे कि विद्यार्थियों के उत्थान में काफी मददगार साबित होगी। आईपीआर सैल इंचार्ज एवं सहायक निदेशक डॉ. विनोद ने बताया कि 10 दिवसीय प्रशिक्षण में एचएयू, संबंधित कॉलेजों, शोध केंद्रों व हांसी के राजकीय महिला महाविद्यालय से आए कुल 15 शिक्षक भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण में शिक्षकों को कृषि से संबंधित क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण विषय पर जानकारी दी जाएगी। साथ ही पेटेंट फाइलिंग, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, डिजाइन, पीपीवीएफ एंड आर, भौगोलिक संकेतों सहित आईपीआर के विभिन्न डोमेन विषयों पर अलग-अलग सत्र के माध्यम से व्याख्यान देकर कई महत्वपूर्ण जानकारी भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रतिभागियों को अनुसंधान एवं विकास, दैनिक जीवन और अंतरराष्ट्रीय व्यापार और संबंधों पर आईपीआर की प्रासंगिकता के अलावा प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण और सार्वजनिक निजी भागीदारी के मुद्दों से भी अवगत कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण में वैश्विक परिप्रेक्ष्य से राष्ट्रीय व उच्च शिक्षा संस्थानों की आई पी आर नीतियों पर भी सत्र आयोजित किए जाएगा। साथ ही प्रतिभागियों का आंकलन करने के लिए एक प्री टेस्ट भी लिया जाएगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मंच का संचालन डॉ जयंती टोकस ने किया। अंत में डॉ. अमोघवर्शा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर रजिस्ट्रार डॉ. बलवान सिंह मंडल, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. बलदेव डोगरा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार, वित्त नियंत्रक नवीन जैन सहित अन्य मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	02.05.2023		

शिक्षण संस्थानों में स्थाई नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर युवाओं को नई तकनीकों से जोड़ना जरूरी : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में उच्च शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संपदा अधिकारों, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण की उपयोगिता, विकास व अन्य विषयों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें मुख्यातिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित हुए। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकेडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के आईपीआर प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त रूप से 2 से 11 मई तक आयोजित किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक व कोर्स डायरेक्टर डॉ. मंजू मेहता ने सभी का स्वागत किया।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इस प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य हकृवि सहित अलग-अलग शिक्षण संस्थानों से जुड़े शिक्षकों व शोधकर्ताओं को आईपीआर एवं प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण विषय पर गहनता से जानकारी देना है। उन्होंने बताया कि किसी भी संस्थान द्वारा प्राप्त किए गए आईपीआर की संख्या उसकी शोध गुणवत्ता का सूचक होती है। यह संस्थानों की वैश्विक रैंकिंग के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि 2005 में हकृवि ने डीएचआरएम में आईपीआर सेल की स्थापना की और 2007 में अपनी खुद की आईपीआर नीति विकसित करने वाला पहला कृषि विश्वविद्यालय भी बना। उन्होंने बताया कि हकृवि को 20 पेटेंट, 11 कॉपीराइट, 7 डिजाइन और एक ट्रेडमार्क सहित 39 आईपीआर प्रदान किए गए हैं। विश्वविद्यालय ने अपनी प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण के लिए विभिन्न फर्मों के साथ 579 गैर- अनन्य लाइसेंस समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। उन्होंने बताया कि 21वीं सदी में सबसे चर्चित विषय इनोवेशन अर्थात नवाचार है, जिसमें नई तकनीकों, बेहतर उत्पादों, प्रक्रियाओं व सेवाओं में परिवर्तित करने का समावेश है। उन्होंने बताया कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2010 से 2020 के दशक को नवाचार के दशक के रूप में घोषित किया है। यदि भारत को वैश्विक नवाचार का केंद्र बनाना है तो हमारे युवाओं, विशेष रूप से उच्च शिक्षण संस्थानों में स्थाई नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की आवश्यकता है। इसलिए सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के अनुसंधान को नवाचारों में बदलने के लिए एक व्यापक और कार्यात्मक तंत्र होना चाहिए। यह पारिस्थितिकी तंत्र हमारे युवा छात्रों को नए विचारों और प्रक्रियाओं से अवगत कराकर उन्हें प्रोत्साहित, प्रेरित व पोषित करेगा। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे इस प्रशिक्षण के माध्यम से पेटेंट, कॉपीराइट, डिजाइन व आईपीआर को बारीकी से समझें ताकि वे अपने शिक्षण संस्थानों में जाकर सीखी गई चीजों को लागू कर सकें, जिससे कि विद्यार्थियों के उत्थान में काफी मददगार साबित होगी।

आईपीआर सैल इंचार्ज एवं सहायक निदेशक डॉ. विनोद ने बताया कि 10 दिवसीय प्रशिक्षण में एचएयू, संबंधित कॉलेजों, शोध केंद्रों व हांसी के राजकीय महिला महाविद्यालय से आए कुल 15 शिक्षक भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण में शिक्षकों को कृषि से संबंधित क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण विषय पर जानकारी दी जाएगी। साथ ही पेटेंट फाइलिंग, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, डिजाइन, पीपीवीएफ एंड आर, भौगोलिक संकेतों सहित आईपीआर के विभिन्न डोमेन विषयों पर अलग-अलग सत्र के माध्यम से व्याख्यान देकर कई महत्वपूर्ण जानकारी भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रतिभागियों को अनुसंधान एवं विकास, दैनिक जीवन और अंतरराष्ट्रीय व्यापार और संबंधों पर आईपीआर की प्रासंगिकता के अलावा प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण और सार्वजनिक निजी भागीदारी के मुद्दों से भी अवगत कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण में वैश्विक परिप्रेक्ष्य से राष्ट्रीय व उच्च शिक्षा संस्थानों की आई पी आर नीतियों पर भी सत्र आयोजित किया जाएगा। साथ ही प्रतिभागियों का आकलन करने के लिए एक प्री टेस्ट भी लिया जाएगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मंच का संचालन डॉ जयंती टोकस ने किया।

अंत में डॉ. अमोघवर्शा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर रजिस्ट्रार डॉ. बलवान सिंह मंडल, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. बलदेव डोगरा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार, वित्त नियंत्रक नवीन जैन सहित अन्य अधिकारीगण व शिक्षक मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	02.05.2023		

शिक्षकों को बौद्धिक संपदा अधिकारों व कृषि क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी व्यवसायीकरण पर दी जाएगी जानकारी

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में उ'च शिक्षण संस्थानों में बौद्धिक संपदा अधिकारों, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण की उपयोगिता, विकास व अन्य विषयों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें मुख्यातिथि के तौर पर कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित हुए। मुख्यातिथि ने बताया कि इस प्रशिक्षण का प्रमुख उद्देश्य हकृवि सहित अलग-अलग शिक्षण संस्थानों से जुड़े शिक्षकों व शोधकर्ताओं को आईपीआर एवं प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण विषय पर गहनता से जानकारी देना है। उन्होंने बताया कि किसी भी संस्थान द्वारा प्राप्त किए गए आईपीआर की संख्या उसकी शोध गुणवत्ता का सूचक होती है। यह संस्थानों की वैश्विक रैंकिंग के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे इस प्रशिक्षण के माध्यम से पेटेंट, कॉपीराइट, डिजाइन व आईपीआर को बारीकी से समझें ताकि वे अपने शिक्षण संस्थानों में जाकर सीखी गई चीजों को लागू कर सकें, जिससे कि विद्यार्थियों के उत्थान में काफी मददगार साबित होगी। सहायक निदेशक डॉ. विनोद ने बताया कि प्रशिक्षण में एचएयू, संबंधित कॉलेजों, शोध केंद्रों व हांसी के राजकीय महिला महाविद्यालय से आए 15 शिक्षक भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण में शिक्षकों को कृषि से संबंधित क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण विषय पर जानकारी दी जाएगी। साथ ही पेटेंट फाइलिंग, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, डिजाइन, पीपीवीएफ एंड आर, भौगोलिक संकेतों सहित आईपीआर के विभिन्न डोमेन विषयों पर अलग-अलग सत्र के माध्यम से व्याख्यान देकर कई जानकारी भी दी जाएगी।